ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-10* November- 2017
Innovation The Research Concept

गाँधीजी का शिक्षा दर्शन एवं वर्तमान संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता

सारांश

गांधीजी एक युग प्रवर्तक थे। वे केवल एक राजनैतिक नेता, धर्म मर्मज्ञ, समाज सुधारक व दार्शनिक ही नहीं थे, वरन् एक श्रेष्ठ शैक्षिक चिन्तक भी थे। वे शिक्षा को बालक के सर्वोत्तम विकास का प्रमुख माध्यम मानते थे। उनका मानना था कि शिक्षा बालक का जन्मसिद्ध अधिकार होना चाहिए। वे केवल साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे। उनका मानना था शिक्षा मनुष्य के शरीर, मन, हृदय व आत्मा का विकास करने वाली होनी चाहिए। इसी विचार पर आधारित उनका शिक्षा दर्शन हम जिसे ''बुनियादी'' शिक्षा या ''नई तालीम'' के नाम से बेहतर जानते हैं। अगर आज के संदर्भ में देखा जाए तो भी उनका शिक्षा दर्शन उतना ही प्रासंगिक है। आवश्यक है उसे आज की समकालीन परिस्थितियों के अनुसार यथोचित बनाकर समक्ष आधारित क्रियान्वयन प्रदान करने की।

मनीषा शर्मा
रीडर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
विद्या भवन गो.से. शिक्षक
महाविद्यालय,
उदयपुर

मुख्य शब्द : शिक्षा दर्शन, बुनियादी शिक्षा।

प्रस्तावना

''शिक्षा में मेरा तात्पर्य है– बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुँमुखी विकास।''

–महात्मा गाँधी

गाँधीजी का मानना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक की सम्पूर्ण शक्तियों का विकास कर सके। इसके साथ ही गाँधीजी का मूल मंत्र ''शोषण विहीन समाज की स्थापना करना भी था। जिसकी प्राप्ति हेतु देश के प्रत्येक नागरिक को शिक्षित भी होना चाहिए क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ समाज का निर्माण असंभव है।

गाँधीजी के अनुसार– *''साक्षरता न तो शिक्षा का अन्त है और ना ही आरम्भ। यह केवल साधन है जिसके द्वारा पुरुष तथा स्त्री को शिक्षित किया जा सकता है।''* उनका विश्वास था कि शिक्षा को बालक की समस्त शक्तियों का विकास करना चाहिये जिससे वह पूर्ण मानव बन जाये। पूर्ण मानव का अर्थ बालक के व्यक्तित्व के चारों तत्वों–शरीर, मन तथा आत्मा के समुचित विकास है। इस प्रकार गाँधी के अनुसार शिक्षा को बालक के शारीरिक, मानसिक अथवा बौद्धिक विकास करना चाहिये। जिससे वह जीवन के अन्तिम लक्ष्य (Utimat Aim) 'सत्य' को प्राप्त कर सके।

महात्मा गाँधी दुनिया के ऐसे पहले शिक्षा शास्त्री है, जिन्होंने आजाद भारत में विचार बीज बोकर कार्य पैदा किया एवं स्वभाव का बीज बोकर सौभाग्य की फसल तैयार की। जिससे देश के तमाम बच्चों के साथ नागरिकों का बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्तर उन्नत हुआ।

गाँधीजी का शिक्षा दर्शन का सम्बन्ध उस शिक्षा प्रणाली से है, जो बालकों को पुस्तकीय और अव्यावहारिक शिक्षा से हटाकर उद्योग व कौशल आधारित व्यावहारिक और सर्वांगीण विकास की शिक्षा देती है।

अध्ययन का उद्देश्य

गाँधीजी का शिक्षा दर्शन अपने आप में सम्पूर्ण जीवन की शिक्षा का आधार है। आज के वैश्विक युग में शिक्षा व उसे प्रदान करने के स्वरूप में निरन्तर परिवर्तन आ रहा है। शिक्षा पर सूचना प्रौद्योगिकी ;प्ब्ज्द्ध एवं पुस्तकीय ज्ञान का दबाव निरन्तर बढ़ रहा है। ऐसे वातावरण में सीखने वाला बालक केवल उस ज्ञान को कैसे रहना है? पर केन्द्रित हो रहा है। आज की शिक्षा बालक का केवल प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण के लिये तैयार कर शिक्षित बेरोजगारों की संख्या में वृद्धि का कार्य कर रही है। जबकि अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है बुनियादी शिक्षा बालकों के सर्वांगीण विकास में सहायक हो जीवन

की व्यवहारिक शिक्षा प्रदान करती है। इस दृष्टि से प्रस्तुत लेख में बुनियादी शिक्षा के विभिन्न घटक कौन–2 से है और यह घटक आज की शिक्षा प्रणाली में किस प्रकार है, यह जानने का प्रयास किया गया है।

गाँधीजी का शिक्षा दर्शन

गाँधीजी परम्परागत अर्थों में दार्शनिक नहीं थे, किन्तु उन्होंने दर्शन की सभी समस्याओं पर गंभीर चिन्तन किया था। वे देश की समस्याओं से भली–भाँति परिचित थे। उस समय की दशा व देश की भावी आवश्यकताओं व चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए उनके समाधान को दृष्टिगत रखते हुए 1937 में वर्धा में आयोजित ''अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन'' में गाँधीजी ने अपने विचार व्यक्त किये। इन विचारों के आधार पर कालान्तर में ''नई तालीम'' (बुनियादी शिक्षा) की योजना तैयार की गई। जो 1938 में हरिपुर के अधिवेशन में ''वर्धा शिक्षा योजना'' के नाम से स्वीकृत हुई। यह बुनियादी शिक्षा कई प्रकार की समयानुकूल विशेषताओं को अपने में समाहित किये थी जैसे– उनकी शिक्षा का यह स्वरूप पूर्णतः मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित था। उन्होंने स्वयं भी कहा है– ''हमारी शिक्षा को क्रान्तिकारी होना चाहिए, दिमाग को हाथों के द्वारा प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।'' उनका यह सिद्धान्त सामाजिक दृष्टिकोण से भी बालकों में श्रम के प्रति महत्व, समाज सेवा की भावना, स्वावलम्बन जैसे–महत्वपूर्ण गुणों के विकास में महत्वपूर्ण है। बुनियादी शिक्षा राष्ट्रीय सभ्यता, संस्कृति, दर्शन और जीवन के करीब थी। साथ ही यह सामुदायिक जीवन के आधारभूत व्यवसायों जैसे– कृषि, बागवानी, कताई–बुनाई, मत्स्य पालन, चर्म–कर्म आदि जैसे आधारभूत कौशलों व व्यवसायों के शिक्षण की पैरवी करती है। गाँधीजी के ही शब्दों में ''शिक्षा बेरोजगारी के विरूद्ध एक प्रकार का बीमा होना चाहिए।'' वे बालकों को शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। उनका मानना था बालक ''कमाते हुए सीखें और सीखते हुए कमाए।''

गाँधीजी ने कहा था– ''स्वावलम्बन बुनियादी शिक्षा की तेजाबी आँच है।'' दूसरे शब्दों में शिक्षा वही है जो बालको ंको आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक सभी प्रकार से स्वावलम्बी बनाएं। गाँधीजी का विचार था कि ''भारत जैसे निर्धन देश में शिक्षा अनिवार्य तभी हो सकती है जबकि ऐसा उपाय निकाला जाए कि बालक स्वयं अपनी शिक्षा के खर्च हेतु धन का उपार्जन कर सके।'' बुनियादी विद्यालयों में बालक हस्तकौशल द्वारा शिक्षा प्राप्त करता है तथा उसके द्वारा बनाई हुई वस्तुओं को बेचकर इतना धन प्राप्त किया जा सकता है जिससे उसका खर्च निकल सके। गाँधीजी का विचार था कि बालकों की बनाई इन वस्तुओं को लोग भावात्मक कारणों से खरीदना चाहेंगे। यहाँ उनका यह तात्पर्य कतई नहीं था कि बालकों के परिश्रम से अध्यापक या विद्यालय अर्थोपार्जन करेंगे।

गाँधीजी के शिक्षा दर्शन में बालकों को सामाजिक जीवन के महत्व के ज्ञान पर विशेष ध्यान दिया गया है। जिससे उनमें समाज सेवा, सहकारिता आदि की भावना विकसित हो सके और एक ऐसे समाज की स्थापना हो सके जिसमें प्रत्येक सदस्य अपनी शक्तियों के अनुसार विकास करें और अपनी क्षमता वृद्धि तथा ज्ञान के अनुसार समाज विकास में योगदान दे सकें।

गाँधीजी मातृभाषा को शिक्षा का आधार मानते थे। उनका मानना था कि मातृभाषा को शिक्षा का आधार बनाने से ही देश की संस्कृति व साहित्य समृद्ध हो सकेंगे। इससे विभिन्न वर्ग के बालकों में भाईचारा बढ़ेगा और ऐसी शिक्षा राष्ट्रीय एकता, अखण्डता तथा सामाजिक समरसता बढ़ाने में सहायक होगी। गाँधीजी शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी के कट्टर विरोधी थे। उनका मानना था कि मातृभाषा में शिक्षा होने पर ही देश की संस्कृति और साहित्य समृद्ध होंगे और विभिन्न वर्ग में व्यक्तियों में भाईचारा बढ़ेगा। ''गाँधीजी के शब्दों में ''बालकों पर अंग्रेजी लादना उनके प्राकृतिक विकास को कुण्ठित करना है और सम्भवतया उनमें मौलिकता को नष्ट कर देना है।''

उन्होंने सीखने में समवाय पद्धति पर जोर दिया। जिसमें उनका मानना था कि समस्त विषयों की शिक्षा किसी कार्य या हस्तशिल्प के माध्यम से बालकों को दी जाए। इसी संदर्भ में 'हरिजन' में गाँधीजी ने लिखा है– ''स्थानीय उद्योग अथवा दस्ताकारी ही शिचा की पूरी धुरी है, उसके द्वारा ही बच्चों को अन्य विषयों की शिक्षा प्रदान की जाये। क्योंकि यह उद्योग यंत्रवत नहीं बल्कि वैज्ञानिक आधार पर वस्तुओं और प्रक्रियाओं के क्यों और कैसे? पक्षों को समझने के अवसरों पर बल देती है।'' इसमें सीखने के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त निहित है। गाँधीजी का इस संदर्भ में कहना था' ''वही शिक्षा पक्की हो सकती है जो किसी दस्तकारी या पैदा करने वाले काम के लिए दी जाए और उस दस्तकारी के इर्द–गिर्द अन्य सब तालीम दी जा सके।''

गाँधीजी जीवन के अन्य क्षेत्रों के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी नैतिकता पर बल देते थे। इसी संदर्भ मे उन्होंने लिखा है– ''शिक्षा का मात्र और सम्पूर्ण लक्ष्य नैतिकता के प्रत्यय मे संक्षिप्त किया जा सकता है।'' शिक्षा का नैतिक लक्ष्य चरित्र निर्माण है। ऐसी शिक्षा बालकों में सहयोग, प्रेम, सत्य, अहिंसा, सहानुभूति जैसे गुणों का विकास कर किसी प्रकार की परिस्थिति आने पर स्वयं उचित–अनुचित का निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। गाँधीजी तत्कालीन शिक्षा प्रणाली को जनतांत्रीय मूल्यों के विकास हेतु कृत्रिम व अव्यावहारिक मानते थे क्योंकि वह जीवन की वास्तविक समस्याओं को सुलझाने हेतु व्यावहारिक आधार नहीं प्रदान करती थी। उसके प्रशिक्षण से बालक को अपने परिवेश के प्रति समायोजन में कोई सहायता प्राप्त नहीं होती थी। वे शिक्षा को सक्रिय व सरस वातावरण में प्रदान करने के पक्षधर थे। जिससे बालक अपने परिवेश को समझ उस पर नियंत्रण पाने में कुशल हो सके।

गाँधीजी ने वर्तमान शिक्षा के इस दोष को स्पष्ट रूप से समक्ष लिया था कि वह बालक के जीवन से सम्बन्धित नहीं है। विषय विशेष का अध्ययन करके बालक किसी विषय का ज्ञात तो हो सकता है, परन्तु उसे अपने दैनिक जीवन हेतु उससे कोई व्यावहारिक सीख नहीं मिलती। अस्तु शैक्षिक चिंतन में इस बात की ओर ध्यान दिया गया है कि बालक को उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार प्राकृतिक और व्यावहारिक वातावरण में सीखने पर ध्यान दिया जाए। इससे उसे शिक्षा के द्वारा भावी जीवन में अनुकूलन करने में सहायता मिलती है।

गाँधीजी व्यक्तिगत विकास के साथ समाज की उन्नति का सदैव ध्यान रखते थे। गाँधीजी के शैक्षिक चिन्तन का लक्ष्य बालक में ऐसे नागरिक सुलभ गुणों का विकास

करना था जिनसे वह जनतंत्रीय समाज का एक उपयोगी सदस्य बन सके। नागरिक सुलभ गुणों में सामाजिकता, कर्तव्यपरायणता, कर्मनिष्ठा, कर्तव्यपालन, उत्तरदायित्व को समस्या तथा प्रेम, सहानुभूति, सहयोग आदि सम्मिलित है। गाँधीजी के शैक्षिक चिन्तन में सामूहिक शिक्षा के द्वारा बालकों में इन गुणों के विकास की संकल्पना की गई है।

वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

गाँधीजी की शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा की प्रासंगिकता वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखी जाए तो हम देखते हैं कि इक्कीसवीं शताब्दी के लिए शिक्षा पर यूनेस्को की ''डेलर्स रिपोर्ट'' (1995) में शिक्षा के चार प्रमुख स्तम्भों–

1. जानने के लिये सीखना (Learning to know)
2. जीवन के लिये सीखना (Learning to be)
3. करने के लिए सीखना (Learning to do)
4. साथ रहने के लिए सीखना (Learning to live together)

में से दो महत्वपूर्ण स्तम्भ Learning to know व Learning to do गाँधीजी के विचारों से ही सम्बन्धित है।

इसमें सीखने की प्रक्रिया में सीखने वाले (बालक) को केन्द्र बिन्दु मानने पर जारे दिया गया है। यह गाँधीजी की बुनियादी शिक्षा की ही देन है।

इसी के साथ गाँधीजी शिक्षण को रूचिकर बनाने के लिये खेल, अनुकरण विधि, सहसम्बन्ध विधि, समवाय विधि, क्रियाविधि, श्रवण, मनन आदि शिक्षण विधियों के प्रयोग पर बल देते थे। जो कि शिक्षा मनोविज्ञान के महत्वपूर्ण सिद्धान्त 'करके सीखना' पर आधारित है। आज बालकों को सीखने–सीखाने की प्रक्रिया में यह शिक्षण विधियाँ उपयोगी व प्रासंगिक सिद्ध हो रही है।

आज निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा अधिनियम की बदौलत शिक्षा को जन–जन का हथियार बनाने का प्रयास किया जा रहा है जिससे शोषण विहीन व सर्वोदय समाज की स्थापना की जा सके।

गांधीजी शिक्षा को शिल्प या उद्योग आधारित अर्थात् क्रिया प्रधान बनाने पर जोर देते थे। उनका मानना था कि नीरस व यंत्रवत होने के स्थान पर सक्रिय व सरस होनी चाहिए। इसी सदंर्भ N.C.F.-05 ने भी ज्ञान के नवीन अर्थों के सृजन हेतु शिक्षा को कक्षा–कक्ष की चार दिवारी के बाहर ले जाने पर बल दिया है।

गाँधीजी ने शारीरिक श्रम को महत्व दिया एवं सम्मान किया है। उनके अनुसार– ''प्रत्येक मनुष्य को अपना कार्य स्वयं करना चाहिए। उसे किसी पर निर्भर नहीं होना चाहिए।'' लेकिन आज वर्तमान में बालकों में श्रम के प्रति निष्ठा का अभाव देखा जा रहा है। आज की विभिन्न स्तरों की पाठ्यचर्याओं में श्रम को उचित स्थान प्राप्त नहीं है। जिनसे बालकों का शारीरिक व मानसिक विकास विशिष्ट रूप से प्रभावित हो रहा है। उद्योग केन्द्रित शिक्षा से उन्होंने बालकों में स्वावलम्बन के जिस गुण का विकास करना चाहा था, उससे आज की शिक्षा कोसों दूर है। आज के युवाओं के पास कई प्रकार की डिग्रीयां तो उपलब्ध है, लेकिन कौशलों का अभाव है। जिसके प्रभाव से हर वर्ष डिग्रीधारी बेरोजगारो की संख्या में वृद्धि हो रही है। हर कोई रोजगार पाना चाहता है, लेकिन वे रोजगारों के प्रणेता नहीं बन पा रहे है। इस बढ़ते शहरीकरण एवं गाँवों में उपलब्ध कुटीर धन्धों एवं कृषिकार्य के प्रति युवाओं की बेरूखी ने कोढ़ में खाज का काम किया है। इसका सटीक प्रत्युत्तर बुनियादी शिक्षा के कौशल आधारित पाठ्यक्रम हो सकता है जिससे आज के बालकों में श्रम के प्रति निष्ठा, कौशल व जीवन मूल्यों का विकास किया जा सकेगा।

गाँधीजी ने धर्म की शिक्षा का बहिष्कार किया था क्योंकि उन्हें भय था कि जिन धर्मों की शिक्षा दी जाती है अथवा पालन किया जाता है। वह मेल के स्थान पर झगड़ों का कारक बनती है। जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। गाँधीजी मानते थे कि धर्म केवल जीवन जीने के कुछ पहलूओं को ही प्रभावित नहीं करता अपितु वह जीवन जीने का एक तरीका है।

प्राथमिक स्तर तक मातृभाषा में शिक्षण पर आज N.C.F.-05 भी जोर दे रहा है जिससे बालक अपनी सभ्यता, संस्कृति व जड़ों से जुड़ा रह सके।

इस संदर्भ में गाँधीजी का मानना था कि मातृभाषा को शिक्षा का आधार बनाने से बालकों में आत्मगौरव और राष्ट्रप्रेम की भावना उत्पन्न होगी जो कि राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और सामाजिक समरसता उत्पन्न करने में सहायक हो सकेगी।

इन समस्त संदर्भों की पूर्ति में महत्वपूर्ण स्थान एवं भूमिका अध्यापक की होती है। अध्यापक की भूमिका के लिये उन्होंने कहा है कि ''एक अध्यापक ही सच्चे अर्थों में बालक का मार्गदर्शक होता है। वह स्वयं चरित्रवान, मृदुभाषी कर्तव्यपरायण, ऊर्जावान होना चाहिए। वह सही अर्थों में बालक का मित्र, पथ प्रदर्शक होना चाहिए। आज N.C.F.-05 भी अध्यापक भी बालक के सीखने में सहायक और पथ प्रदर्शक के रूप में स्वीकार करता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि गाँधीजी का शिक्षा दर्शन वर्तमान समय मे भी प्रासंगिक है। जरूरत है उसे आज की समकालीक परिस्थितियों के अनुसार यथोचित बना, समझ आधारित क्रियान्वयन प्रदान करने की। जिससे आज की शिक्षा की चुनौतियों का सक्षम हल खोज नवीन संदर्भों में शैक्षिक पुनर्रचना की जा सके।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *दत्त, धीरेन्द्र मोहन (1973) : महात्मा गाँधी का दर्शन, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना.*
2. *दाधीच, नरेश (2014) : महात्मा गाँधी का चिंतन, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।*
3. *डॉ. पाण्डेय रामशकल (2010) : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।*
4. *गाँधी, एम.के. हरिजन जुलाई (1937)*
5. *गाँधी महात्मा, माई एज्सपेरीमेन्ट्स विथ द ट्रुथ (आत्मचरित्र) वर्धा, 1935*
6. *गाँधी, एम.के. (2002) : हिन्दी स्वराज, सर्व सेवा संघ, वाराणसी.*
7. *गाँधी, एम.के. To the student, Navjivan*
8. *कृपलानी, कृष्ण (2005) : गाँधीजी : एक जीवनी, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नईदिल्ली।*
9. *माणक जैन (2010) : गाँधीजी के विचारों की 21वीं सदी में प्रासंगिकता, प्रकाशक आदि पब्लिकेशन, जयपुर।*
10. *पटेल, मणिशंकर : दि एजुकेशनल फिलासॉफी ऑफ महात्मा गाँधी।*